रविवार 22 मार्च, 2026

विषय — सामग्री

स्वर्ण पाठ: यिर्मयाह 31: 14

"और मेरी प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी, यहोवा की यही वाणी है।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 37: 16-19, 23, 25, 28, 29

16 धर्मी का थोड़ा से माल दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है।
17 क्योंकि दुष्टोंकी भुजाएं तो तोड़ी जाएंगी; परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता है॥
18 यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है, और उनका भाग सदैव बना रहेगा।
19 विपत्ति के समय, उनकी आशा न टूटेगी और न वे लज्जित होंगे, और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे॥
23 मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है।
25 मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है।
28 क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता; और अपने भक्तों को न तजेगा। उनकी तो रक्षा सदा होती है, परन्तु दुष्टों का वंश काट डाला जाएगा।
29 धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और उस में सदा बसे रहेंगे॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. निर्गमन 20: 1, 17

1 तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे,
17 तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के दास-दासी, वा बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना॥

2. सभोपदेशक 5: 7, 9, 10, 12-14 (से :), 18-20

7 क्योंकि स्वप्नों की अधिकता से व्यर्थ बातों की बहुतायत होती है: परन्तु तू परमेश्वर को भय मानना॥
9 भूमि की उपज सब के लिये है, वरन खेती से राजा का भी काम निकलता है।
10 जो रूपये से प्रीति रखता है वह रूपये से तृप्त न होगा; और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है, लाभ से: यह भी व्यर्थ है।
12 परिश्रम करने वाला चाहे थोड़ा खाए, था बहुत, तौभी उसकी नींद सुखदाई होती है; परन्तु धनी के धन के बढ़ने के कारण उसको नींद नहीं आती।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

13 मैं ने धरती पर एक बड़ी बुरी बला देखी है; अर्थात वह धन जिसे उसके मालिक ने अपनी ही हानि के लिये रखा हो,
14 और वह किसी बुरे काम में उड़ जाता है; और उसके घर में बेटा उत्पन्न होता है परन्तु उसके हाथ मे कुछ नहीं रहता।
18 सुन, जो भली बात मैं ने देखी है, वरन जो उचित है, वह यह कि मनुष्य खाए और पीए और अपने परिश्रम से जो वह धरती पर करता है, अपनी सारी आयु भर जो परमेश्वर ने उसे दी है, सुखी रहे: क्योंकि उसका भाग यही है।
19 वरन हर एक मनुष्य जिसे परमेश्वर ने धन सम्पत्ति दी हो, और उन से आनन्द भोगने और उस में से अपना भाग लेने और परिश्रम करते हुए आनन्द करने को शक्ति भी दी हो- यह परमेश्वर का वरदान है।
20 इस जीवन के दिन उसे बहुत स्मरण न रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर उसकी सुन सुनकर उसके मन को आनन्दमय रखता है॥

3. प्रेरितों के काम 8: 5-9, 11-13 (से :), 14, 15, 17-22, 24

5 और फिलेप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।
6 और जो बातें फिलेप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।
7 क्योंकि बहुतोंमें से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई, और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगडे भी अच्छे किए गए।
8 और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ॥
9 इस से पहिले उस नगर में शमौन नाम एक मनुष्य था, जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरूष बनाता यां
11 उस ने बहुत दिनों से उन्हें अपने टोने के कामों से चकित कर रखा था, इसी लिये वे उस को बहुत मानते थे।
12 परन्तु जब उन्होंने फिलेप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरूष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।
13 तब शमौन ने आप भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलेप्पुस के साथ रहने लगा और चिन्ह और बड़े बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था।
14 जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा।
15 और उन्होंने जाकर उन के लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं।
17 तब उन्हों ने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।
18 जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उन के पास रूपये लाकर कहा।
19 कि यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए।
20 पतरस ने उस से कहा; तेरे रूपये तेरे साथ नाश हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रूपयों से मोल लेने का विचार किया।
21 इस बात में न तेरा हिस्सा है, न बांटा; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं।

22 इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए।
24 शमौन ने उत्तर दिया, कि तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उन में से कोई मुझ पर न आ पड़े॥

4. 2 कुरिन्थियों 10: 13, 15 (से ;), 17, 18

13 हम तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न करेंगे, परन्तु उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिये ठहरा दी है, और उस में तुम भी आ गए हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे।
15 और हम सीमा से बाहर औरों के परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते; परन्तु हमें आशा है, कि ज्यों ज्यों तुम्हारा विश्वास बढ़ता जाएगा त्यों त्यों हम अपनी सीमा के अनुसार तुम्हारे कारण और भी बढ़ते जाएंगे।
17 परन्तु जो घमण्ड करे, वह प्रभु पर घमण्ड करें।
18 क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है, वह नहीं, परन्तु जिस की बड़ाई प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है॥

5. 2 कुरिन्थियों 9: 6 (वह)-8

6 परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।
7 हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।
8 और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।

6. इब्रानियों 13: 1, 2, 5, 6 (से *2nd* ,), 20, 21

1 भाईचारे की प्रीति बनी रहे।
2 पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है।
5 तुम्हारा स्वभाव लोभरिहत हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो; क्योंकि उस ने आप ही कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।
6 इसलिये हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है॥
20 शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिला कर ले आया।
21 तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिस से तुम उस की इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उस को भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे, जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 60: 31-11

सिर्फ़ ऊँचे मज़े ही अमर इंसान की इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं। हम खुशी को अपनी समझ की सीमाओं में नहीं बाँध सकते। समझ कोई असली मज़ा नहीं देती।

इंसानी प्यार में अच्छाई को बुराई पर और रूहानी को जानवरों पर हावी होना चाहिए, वरना खुशी कभी नहीं मिलेगी। इस आसमानी हालत को पाने से हमारी औलाद अच्छी होगी, जुर्म कम होगा, और उम्मीदों को ऊँचे लक्ष्य मिलेंगे। पाप की हर घाटी को ऊँचा करना होगा, और मतलबीपन के हर पहाड़ को नीचा करना होगा, ताकि साइंस में हमारे भगवान का रास्ता तैयार हो सके।

2. 57: 15-21

सुंदरता, धन या प्रसिद्धि, प्यार की मांगों को पूरा करने में असमर्थ हैं, और इन्हें कभी भी बुद्धि, अच्छाई और गुण के बेहतर दावों के सामने नहीं तौलना चाहिए। खुशी आध्यात्मिक है, जो सत्य और प्रेम से पैदा होती है। यह निस्वार्थ है; इसलिए यह अकेले नहीं रह सकता, बल्कि इसके लिए सभी इंसानों को इसे शेयर करना होगा।

3. 181: 21-14

अगर आप मन के साइंस से प्यार करने के लिए बहुत ज़्यादा भौतिक हैं और असर के बजाय अच्छी बातों से खुश रहते हैं, अगर आप गलती पर टिके रहते हैं और सच पर भरोसा करने से डरते हैं, तो यह सवाल बार-बार आता है, "एडम, तुम कहाँ हो?" बीमार लोगों को यह यकीन दिलाने के लिए कि आप उनके लिए कुछ कर रहे हैं, मन के अलावा किसी और चीज़ का सहारा लेना ज़रूरी नहीं है, क्योंकि अगर वे ठीक हो जाते हैं, तो वे आम तौर पर यह जानते हैं और खुश होते हैं।

"जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" अगर आपको सच से ज़्यादा ड्रग्स पर भरोसा है, तो यह भरोसा आपको मैटर और गलती की तरफ़ ले जाएगा। आप जो भी हिप्नोटिक पावर इस्तेमाल करेंगे, वह साइंटिस्ट बनने की आपकी काबिलियत को कम कर देगी, और इसका उल्टा भी होगा। सिर्फ़ दिव्य मन से बीमारों को ठीक करने का काम, सत्य से गलतियों को दूर करना, एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट के तौर पर आपकी स्थिति दिखाता है।

भगवान की मांगें सिर्फ़ सोच को अपील करती हैं; लेकिन मौत के दावे, और जिन्हें प्रकृति के नियम कहा जाता है, वे मैटर से जुड़े हैं। तो फिर, हम किसे सही और सबसे ज़्यादा इंसानी भलाई करने में काबिल मानें? हम शरीर और आत्मा दोनों की बात नहीं मान सकते, क्योंकि एक दूसरे को पूरी तरह खत्म कर देता है, और भावनाओं में एक या दूसरे को सबसे ऊपर होना चाहिए। दो नज़रिए से काम करना नामुमकिन है। अगर हम ऐसा करने की कोशिश करेंगे, तो हम तुरंत "एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा।"

4. 272: 19-25

यह दुनियावी दुनिया के भयानक दिखावे के नतीजों के उलट, सोच का स्पिरिचुअलाइज़ेशन और रोज़मर्रा की ज़िंदगी का क्रिश्चियनाइज़ेशन है; यह पवित्रता और पवित्रता है, जो कामुकता और गंदगी की नीचे की ओर जाने वाली आदतों और धरती की ओर गुरुत्वाकर्षण के उलट है, जो असल में क्रिश्चियन साइंस की दिव्य शुरुआत और काम को साबित करता है।

5. 445: 27-4

बिना सोचे-समझे माइंड हीलिंग सिखाने में बहुत खतरा है, इस तरह स्टूडेंट के मोरल्स को नज़रअंदाज़ करना और सिर्फ़ फीस का ध्यान रखना। गुलामी के बारे में जेफरसन के शब्दों को याद करते हुए, "जब मुझे याद आता है कि भगवान इंसाफ करने वाले हैं, तो मैं कांप जाती हूँ," लेखिका तब कांप उठती है जब वह किसी आदमी को, पैसे के लिए, माइंड-पावर के अपने थोड़े से ज्ञान को सिखाते हुए देखती है, — शायद अपनी बुरी नैतिकता बताकर, और इस तरह सेल्फ-डिफेंस के लिए तैयार न होने वाले समुदाय के साथ बेरहमी से पेश आते हुए।

6. 239: 5-10

दौलत, शोहरत और सोशल ऑर्गनाइज़ेशन को हटा दें, जिनका भगवान के तराजू में कोई वज़न नहीं है, और हमें उसूलों के बारे में ज़्यादा साफ़ नज़रिया मिलेगा। गुटबाज़ी को तोड़ दें, दौलत को ईमानदारी से बराबर करें, समझदारी से कीमत तय करें, और हमें इंसानियत के बारे में बेहतर नज़रिया मिलेगा।

7. 296: 14-18, 26-30

चीज़ों के तथाकथित सुख और दुख खत्म हो जाते हैं, और उन्हें सच, आध्यात्मिक समझ और होने की असलियत की आग में बुझना ही चाहिए। उनसे अलग होने के लिए इंसानी विश्वास को गलती और पाप में अपनी सारी संतुष्टि खो देनी चाहिए।

इंसानी मन शरीर की इंद्रियों की गवाही से फैसला करता है, जब तक कि साइंस इस झूठी गवाही को खत्म नहीं कर देता। एक बेहतर विश्वास गलती से एक कदम दूर है, और अगला कदम उठाने और क्रिश्चियन साइंस में स्थिति को समझने में मदद करता है।

8. 62: 20-28

अगर हम समझदार और हेल्दी रहना चाहते हैं, तो हमें चीज़ों को ज़्यादा से ज़्यादा समझदारी नहीं देनी चाहिए, बल्कि कम से कम देनी चाहिए। दिव्य मन, जो कली और फूल बनाता है, इंसान के शरीर की देखभाल करेगा, जैसे वह लिली को कपड़े पहनाता है; लेकिन किसी भी इंसान को गलत, इंसानी सोच के नियम थोपकर भगवान के राज में दखल नहीं देना चाहिए।

इंसान का ऊँचा स्वभाव निचले स्वभाव से कंट्रोल नहीं होता; अगर ऐसा होता, तो समझदारी का क्रम उलट जाता।

9. 407: 6-20

इंसान की गुलामी, जो सबसे बेरहम मालिकों – जुनून, स्वार्थ, जलन, नफ़रत और बदले – की है, सिर्फ़ एक ज़बरदस्त लड़ाई से ही जीती जा सकती है। हर घंटे की देरी लड़ाई को और मुश्किल बनाती है। अगर इंसान जुनून पर जीत नहीं पाता, तो वे खुशी, सेहत और मर्दानगी को कुचल देते हैं। यहाँ क्रिश्चियन साइंस सबसे बड़ा रामबाण इलाज है, जो नश्वर मन की कमज़ोरी को ताकत देता है – अमर और सबसे ताकतवर मन से ताकत – और

इंसानियत को खुद से ऊपर उठाकर पवित्र इच्छाओं की ओर ले जाता है, यहाँ तक कि इंसान के लिए आध्यात्मिक शक्ति और अच्छी इच्छा की ओर भी।

गलत इच्छाओं के गुलाम को क्रिश्चियन साइंस के सबक सीखने दो, और वह उस इच्छा पर काबू पा लेगा, और सेहत, खुशी और ज़िंदगी के पैमाने पर एक पायदान ऊपर चढ़ जाएगा।

10. 265: 24-30

स्वर्ग की अच्छाई की चाहत तब भी होती है, जब हम यह नहीं जानते कि ज्ञान और प्रेम से क्या जुड़ा है। दुनियावी उम्मीदों और सुखों का खो जाना कई दिलों के ऊपर उठने के रास्ते को रोशन कर देता है। इंद्रियों का दर्द हमें जल्दी ही बता देता है कि इंद्रियों के सुख नश्वर हैं और खुशी रूहानी है।

11. 66: 11-16

आध्यात्मिक विकास दुनियावी उम्मीदों की मिट्टी में बोए गए बीज से नहीं होता, बल्कि जब ये खत्म हो जाती हैं, तो प्यार आत्मा की ऊँची खुशियों को नए सिरे से फैलाता है, जिनमें धरती का कोई दाग नहीं होता। अनुभव का हर अगला पड़ाव भगवान की अच्छाई और प्यार के नए नज़रिए दिखाता है।

12. 60: 2-3

साइंस ज़रूर किसी को तालमेल और खुशी के लेवल पर ऊपर ले जाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी

सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6